समकालीन अमेरिकी कला में भारतीय प्रेरणा

समकालीन प्रत्युत्तर और संकर रूप

कैथरीन मायर्स

भारत की कलात्मक, सांस्कृतिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक परंपराओं से अमेरिकी संपर्क का समृद्ध इतिहास लगभग 19वीं सदी के मध्य से शुरू होता है, जब राल्फ़ वाल्डो एमर्सन और हेनरी डेविड थोरो जैसे प्रसिद्ध अमेरिकी ध्यानातीतवादियों ने भारतीय आध्यात्मिकता की अद्वैतवादी वृत्ति में विचार के साझे सूत्र पाए।

तब से भारत में अमेरिकियों की रुचि निरंतर अधिक व्यापक और गहरी होती चली गई है। 1917 में आनन्द कुमारस्वामी *बॉस्टन म्यूजियम ऑफ फाइन आर्ट* में भारतीय कला के संग्राहक नियुक्त हुए, उनके जैसे कलारसिकों ने अमेरिका भर में भारतीय कला के महत्वपूर्ण संग्रह खड़े किए। भारतीय दर्शन, धर्म और कला के विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रमों और 1985 में अमेरिकी संग्रहालयों में भारतीय कला, संगीत-नृत्य और सिनेमा की झलक दिखाने वाली भारत महोत्सव जैसी प्रदर्शनियों ने अमेरिका-भारत कला संबंधों को और समृद्ध बनाया।

19वीं और 20वीं सदी में चेतना के विस्तार के लिए पौर्वात्य साधनाएं सीखने वाले कलाकारों ने अनुभव किया कि यथार्थ के अनुभवातीत स्तरों को अभिव्यक्त करने के लिए अमूर्तन ही सबसे प्रभावी तरीका है। यंत्र और मंडल जैसे अमूर्त रेखांकनों का प्रयोग करने वाली गूढ़ अनुष्ठान पद्धति तंत्र का उन पर काफी प्रभाव रहा।

कुछ कलाकार जहां भारतीय कला के औपचारिक तत्व उठाते हैं, वहां शैली और मन्तव्य की दृष्टि से दो भिन्न छोरों पर खड़े अमूर्त एक्सप्रेशनिस्ट चित्रकार एड राइनहार्ट और समकालीन विडियो कलाकार बिल वायॅला की कृतियां भारतीय कला और अनुष्ठान के दार्शनिक और आध्यात्मिक पक्षों पर आधारित होती हैं।

दो भिन्न संस्कृतियों के आदान-प्रदान से अस्तित्व में आई कला संकर रूपों और नई प्रक्रियाओं और प्रतीकों के संधान का समृद्ध अनुभव उपलब्ध करवाती है। उन संबंधों में संतुलन और तालमेल बैठाना एक चुनौती बना रहता है। *ऐन आर्ट ऑफ अवर ओन : द स्पिरिचुअल इन ट्वेंटिएथ सेंचुरी आर्ट* में रोजर लिप्सी कहते हैं कि प्राचीन रूपों और प्रविधियों की ओर आकृष्ट होने वाले कलाकारों को अक्सर अपने युग के साथ जुड़े रहने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। नई दिल्ली के वासी अमेरिकी कलाकार और क्यूरेटर पीटर नागी शोषण के खतरों... और दो संस्कृतियों के मिलने पर (होने वाले) गलत तत्ववादी अर्थान्वय के खतरों से आगाह करते हैं। जहां कुछ लोग सांस्कृतिक चोरी या छिछली समझदारी से आक्रांत रहते हैं, वहीं संकरता के कलात्मक प्रयासों को वैश्विक रुचि और चेतना के उदाहरणों के तौर पर प्रेरित भी खूब किया जाता है। *ओरिएंटलिज्म* में एडवर्ड सईद ने दूसरी संस्कृतियों से अंतर्क्रिया के फलस्वरूप प्रकट होने वाले हानिकारक प्रयासों की ओर ध्यान खींचा है लेकिन उनकी आस्था ''मुक्ति और उस सतत प्रक्रिया में जो बौद्धिक कर्त्तव्य को दिशा और आकार देती है'' हमेशा बनी रही।

अमेरिकी विदेश विभाग द्वारा वित्तपोषित फुलब्राइट फाउंडेशन उन गिनीचुनी एजेंसियों में से एक है जो कलाकारों की सृजनशील परियोजनाओं और शोध के लिए वित्तीय सहायता देती हैं और अमेरिकी व भारतीय कलाकारों के बीच कलात्मक आदान-प्रदान को संभव बनाती हैं।

भारत के साथ कलात्मक और बौद्धिक आदान-प्रदान की परंपरा को बनाए रखते हुए पांच समकालीन कलाकार माइकेल पीटर केन, शार्लट

माइकेल पीटर केन के शिल्प गार्ड कसेरा, ओम प्रकाश कसेरा, राजेश कसेरा, पप्पू विश्वकर्मा और राकेश अग्रवाल के सहयोग से तैयार हुए।

सेवन लेवल्स ओवन *(बाएं)*
निर्माणाधीन शिल्प का डिजिटल प्रतिरूप, तांबे पर रिपूज, पैटिना और फ्लॉक।
29 सेमी. × 30 सेमी. × 13 सेमी., 2001 ।

बिकमिंग सोर्सेज ईज आउट *(नीचे) पीतल पर रिपूज और पैटिना, ढलवां पीतल और कांस्य 150 सेमी. × 60 सेमी. × 60 सेमी., 2001 ।*

केन, नैंसी बॉवेन, जेम्स कुक और रॉबर्ट कर्शबॉम अमेरिकी कलाकारों पर भारत के प्रभाव के विविध और बेहद व्यक्तिनिष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

1960 के दशक में माइकेल पीटर केन येल विश्वविद्यालय में चित्रकला के छात्र थे, आनन्द कुमारस्वामी के लेखन, भारतीय धार्मिक व्यक्तित्वों तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत से प्रभावित होकर वह और उनकी पत्नी शार्लट भारतीय कला व संस्कृति की ओर उन्मुख हुए। कुमारस्वामी ने सौंदर्यात्मक अनुभव को तत्वबोध का 'जुड़वां भाई' बताया है, इससे प्रेरणा पाकर वे शुद्ध चेतना को अभिव्यक्त और उद्बोधित करने वाली कला की रचना के प्रयास में जुटे। 1968 में प्रकाशित अजित मुकर्जी की कृति *'तंत्र आर्ट'* ने केन दम्पत्ति की अभिलाषा को और प्रबल बनाया, इस पुस्तक में रोजमर्रा के जीवन में चिन्मय की उपस्थिति को प्रस्तुत करने वाली भारतीय कलाकृतियों के बहुत से चित्र थे। 1970 में पीटर और शार्लट ध्यान की प्रक्रिया सीखने के लिए पहली बार भारत आए। 1996-97 में माइकेल फुलब्राइट फैलोशिप के तहत हिन्दू मूर्तिशिल्प की ''सतत परम्परा'' का अध्ययन और अभ्यास करते हुए 17 महीने भारत में रहे, शार्लट चम्बा और जयपुर के लघुचित्र कलाकारों के साथ अभ्यास करती रहीं।

माइकेल की विशेष रुचि हिन्दू प्रतिमाओं की प्रक्रिया और प्रकार्य में थी। चम्बा, स्वामीमलै और वाराणसी में पारंपरिक शिल्पियों के सहयोग से उन्होंने जो कृतियां गढ़ीं उनमें पश्चिमी मिनिमलिस्ट रूपों को भारतीय धार्मिक कला के तत्वों के बरक्स प्रस्तुत किया गया था। जल, पौराणिक जीवों और वनस्पतियों के बिंबों के अंतर्गुंफन से प्रकृति की समलय प्रचुरता और परमतत्व की अभिव्यक्ति करने वाले परंपरागत भारतीय और इंडो-इस्लामिक अलंकरणों में उनकी रुचि बढ़ी। धातु के पत्तरों को पीटकर उनमें त्रिआयामी आकार उभारने की प्रविधि रिपूज़ पश्चिम में लगभग भुला दी गई है, माइकेल ने गोलक और शंकु जैसे आकारों को उभारने के लिए इसे अपनाया है। उनके तात्विक रूपों में 1960 के दशक की मिनिमलिस्ट कला के अमूर्तन और तांत्रिक रेखाचित्रों और प्राचीन यूरोपियन कीमियागिरी के प्रतीकों का रेखागणित संदर्भित है। एक-एक कृति पर बारह-बारह विशिष्ट शिल्पकारों ने काम किया है। माइकेल और उनके सहयोगियों ने अलंकरणों का इस्तेमाल करके शिल्पों की सतहों को जीवंत बनाया है। उनकी नवीनतम कृति में एक खंड के माध्यम से संपूर्ण का आभास करवाया गया है, इसमें दिखते अंदर की सतह पर उभरे हुए बिंब वाराणसी के दुर्गा मंदिर के कांस्य शार्दूल की अयाल से लिए गए हैं। माइकेल कहते हैं, ''मुझे लगता है कि हमारी कृतियों से बने छोटे-छोटे पुल स्थानीय मूर्तिनिर्माण को विश्व संस्कृति से जोड़कर वैश्विकवाद द्वारा किए जा रहे संभागीकरण का प्रतिरोध करते हैं।''

शार्लट केन को 1996 में फुलब्राइट अध्ययन वृत्ति प्रदान की गई। उन्होंने हिमाचल प्रदेश के

हेरॉड्स गेट
रॉबर्ट कर्शबॉम
लकड़ी पर तैल रंग
41 सेमी. × 38 सेमी.

विभिन्न संस्कृतियों द्वारा एक दूसरे को प्रभावित करने की प्रक्रिया से उपजी कला संकर रूप, नई प्रक्रियाएं और प्रतीक उपलब्ध करवाती है।

अमेरिकन बुक ऑफ द डेडः
द मेकैनिक्स ऑफ प्रेयर
जेम्स ए कुक,
अंतर्क्रियात्मक शिल्प, 2001

लव लव्स लव
शार्लेट केन
कागज पर गुआशे
30 सेमी. × 22 सेमी., 2003

विजय शर्मा और राजस्थान के बन्नू शर्मा जैसे लघुचित्रण शैली के सिद्धहस्त कलाकारों के सान्निध्य में ''आंतरिक निविड़ता और अनंत के आभास'' को उद्‌बोधित करने वाली कृतियों के लिए समुचित प्रविधियां विकसित की हैं। उन्हें लगता है कि लघुचित्र रचना की प्रविधियों, खासतौर पर महीन पर्तें तैयार करने से उनके लिए ब्रश की नोक और कागज के संपर्क के बिन्दु पर ध्यान को केंद्रित करके 'मानस की चेतना को हाथ के माध्यम से चित्रित सतह पर प्रवाहित कर पाना' सम्भव हो पाया है।

पुराने भारतीय कागज पर चित्रित शार्लट के कई गुआशे भारतीय गृहणियों द्वारा सूर्योदय से पहले ही

वंडर,
नैंसी बॉवेन,
प्लास्टर, इस्पात, माटी, चांदी का वर्क
226 सेमी. × 191 सेमी. × 84 सेमी. 1999-2000

भारत में इस्तेमाल करने की चीजों और कला के बीच की सीमारेखा लचीली है।

घर के दरवाजे पर बनाई जाने वाली जटिल रेखीय रंगोलियों को बिंबित करते हैं जिनमें निरंतर खुद से ही गुंथी जाती रेखाएं अनंतता का आभास कराती हैं। उन पर तांत्रिक कला के रेखाचित्रण का प्रभाव भी दिखता है। कोलम नंबर 7 जैसे चित्रों में आनुष्ठानिक बिंब दिखते हैं। लघुचित्रण की शास्त्रीय प्रविधियों से कोलम जैसी लोकाभिमुख आकृतियों और तांत्रिक रेखाचित्रों का सृजन अनंत की अनुभूति कराती मौन, महीन ढंग से संतुलित और मुखरित सतहों की रचना को संभव बनाता है।

केन दम्पति फेयरफील्ड, आयोवा स्थित महर्षि यूनिवर्सिटी ऑफ मैनेजमेंट के एमेरिटस प्रोफेसर हैं।

शिल्पी नैंसी बॉवेन भारत को समकालीन शिल्पियों का महत्वपूर्ण स्रोत मानती हैं। कई बरस पहले अपनी पहली भारतयात्रा में उन्होंने अजंता की गुफाएं, खजुराहो के मंदिरों के शृंगारिक मूर्तिशिल्प और महाबलिपुरम के प्रस्तरशिल्प देखे। वे इन ऐतिहासिक स्मारकों से बहुत प्रभावित हुईं लेकिन इनसे भी अधिक प्रेरित वे गलियों, गंवई हाटों और सड़कों के किनारे स्थित आस्था-स्थलों पर वस्तुओं की भरमार से हुईं जहां इस्तेमाल की चीजें और कला, धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष, अनुष्ठान और काम के बीच पश्चिम द्वारा खड़ी की गई दीवारें ढहती सी दिखती हैं। उदात्त हों या कामचलाऊ, सभी तरह की वस्तुओं को तैयार करने में यहां बरती जाने वाली सावधानी के लिए उनके मन में गहरा सम्मान जागा। उन्हें ऐसे समकालीन शिल्पी मिले जो समकालीन जीवन की जटिलताओं के प्रत्युत्तर रचते हुए प्राचीन रूपों में वैधता पाते रहे हैं।

अलग-अलग सामग्रियों और अलग-अलग चाक्षुष मुहावरों को मिलाने की स्वतंत्रता की समझदारी के साथ अपने ब्रुकलिन स्थित स्टूडियो में नैंसी कुम्हारी और फर्नीचर जैसी व्यावहारिक कलाओं की भाषा का प्रयोग करते हुए सजावटी संरचनागत, आकृतिमूलक और अमूर्त तत्वों को मिलाने लगीं। शरीर रचनाशास्त्र की प्राचीन पद्धति चक्र के आकारों पर आधारित *वंडर* में उन्होंने आकार पर चांदी के वर्क चढ़ाने की प्रक्रिया और राणकपुर में देखी जैन मूर्तियों की दैनिक पूजा में साम्य का संधान किया। नैंसी अपनी कृतियों को मननशील वस्तुएं मानती हैं। उन्हें लगता है कि वे शरीर रचनाशास्त्र से लेकर पूर्वी धर्म तक की विभिन्न पद्धतियों के भौतिक अर्थान्वयों में एक अलंकारिक तत्व जोड़ती हैं और 'अनाम, अपरिचित और चिर परिचित' लगते आकारों का आह्वान करती हैं। नैंसी

बॉवेन परचेज स्थित स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क में शिल्प की प्रोफेसर हैं।

मूर्तिकार जेम्स कुक के शोध और काम में धार्मिक वस्तुओं और संरचनाओं के सृजन और प्रकार्य के प्रति गहरे सम्मान का भाव अंतर्निहित है। वे 1980 से भारत और नेपाल के पारंपरिक कलाकारों और शिल्पियों की सृजनात्मक रीतियों का अध्ययन कर रहे हैं। शुरू में दक्षिण भारत प्रवास के दौरान हुए कौतूहलपूर्ण अनुभवों से प्रेरित होकर वह धार्मिक मूर्तियों और मंदिरों के परंपरागत निर्माण की पड़ताल करने को प्रेरित हुए। उनकी मल्टीमीडिया कृतियां पारंपरिक दक्षिण एशियाई कलाकार, प्रतिमा, पूजक और पश्चिम के कलाकार, कलाकृति और दर्शक के बीच के तात्विक अंतरों को प्रतिबिंबित करने और पहचानने का प्रयास करती हैं। वह मानते हैं कि हिंदू दर्शन के माध्यम से प्राप्त स्वरूप ''अस्तित्व के अधिक तात्विक स्तरों'' तक पहुंच पाता है, वह वास्तुशास्त्र से भी प्रेरणा पाते हैं, जिसमें माना जाता है कि किसी बिंब या रूप का बोध ''सभी जैविक और बौद्धिक आत्मिक ऊर्जाओं को एक साथ हो सकता है और इसके लिए छवियों की एक शृंखला के माध्यम से मानसिक रूप से जुड़े होने की जरूरत नहीं होती।''

जेम्स इस सर्वव्यापी ढंग से रूप को समझने में पाश्चात्य दर्शक की मुश्किल को पहचानते हैं, उनका इंस्टालेशन *अमेरिकन बुक ऑफ द डैड : मेकैनिक्स ऑफ प्रेयर* इस तथ्य को रेखांकित करता है। दर्शक-सहभागी एक फुट ट्रैडल पर पांव चलाकर एक घिर्री को चलाता है जो एक लम्बी रस्सी के दूसरे छोर से जुड़ी कई छोटी घिर्रियों को संचालित करती है। इन छोटी घिर्रियों के घूमने से एक पुरानी सिलाई मशीन की मेज पर सोने के वर्क से जड़ी एक इस्पाती छड़ ऊपर-नीचे जाती है, मेज पर रखे एक छोटे से दर्पण में अपने प्रतिबिंब के साथ प्रार्थना का बिंब रचता एक सफेद हाथ यांत्रिक ढंग से आगे-पीछे आता जाता है। इस्पाती छड़ ऊपर जाते हुए एक और छड़ से टकराकर एक बिजली के सर्किट में शॉर्ट कर देती है, जिससे प्रार्थना यंत्र पर चिनगारियों की हल्की सी बौछार होती है। कुक इसे और कुछ अन्य कृतियों को ''पूरी तरह तार्किक रणनीतियों और खोखले, यांत्रिक ढंग से निभाए गए अनुष्ठानों पर निर्भर होते हुए गूढ़ अनुभवों तक पहुंचने की दिक्कतों की बेतुकी समालोचना'' का साधन मानते हैं। जेम्स के काम में कभी-कभी एक तीखी हताशा झलकती है, लेकिन भारतीय कला, अध्यात्म और दर्शन की बहुस्तरीय पड़ताल उन्हें निरन्तर पोषित करती है, वह टक्सन स्थित एरिजोना विश्वविद्यालय में शिल्प के प्रोफेसर हैं और 1996 में उन्हें भारत में अध्ययन के लिए फुलब्राइट वृत्ति मिली थी।

प्लेंटी
नैसी बॉवेन,
रेजिन, कांच, मोम, इस्पात और मिश्रित माध्यम
198 सेमी. × 140 सेमी., 2002

भारतीय कला और संस्कृति ने रॉबर्ट कर्शबॉम के जीवन और कृतित्व को तो समृद्ध बनाया ही है, अपनी यहूदी विरासत की उनकी समझदारी को भी गहराई दी है। ''पश्चिम के कलात्मक प्रचलनों ने समकालीन कलाकार पर धर्मनिरपेक्षता लादी है लेकिन हममें से बहुतेरे कलाकारों और शिल्पियों के रूप में अपनी विरासत के प्राथमिक आध्यात्मिक आधार को फिर से पाने और अर्थान्वित करने का प्रयास कर रहे हैं।'' पहले भी रॉबर्ट के छापों, रेखाचित्रों और शिल्पों के केंद्र में यहूदी और भारतीय संस्कृति में पवित्र स्थल होते थे। फिर 1996 में फुलब्राइट वृत्ति के तहत उन्हें भारत में तमिलनाडु से लेकर लद्दाख तक घूमकर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में चिन्मय की कल्पना के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली सामग्रियों और रूपों की व्यापक शृंखला को अनुभव कर पाने का सुयोग मिला। मुंबई के बेनेइज़रायल यहूदी समुदाय और कोंकणतट पर उनके धार्मिक स्थलों के संपर्क में आकर उन्हें समन्वय की प्रेरणा मिली। यहूदी सिनागॉग, हिन्दू वेदी और तिब्बती कॉर्टेन की संरचनाओं पर व्यापक शोध में उन्हें आश्चर्यचकित करने वाली समानताएं दिखीं।

यंत्र, मंडल, कबाला जैसी यहूदी और भारतीय अमूर्त आनुष्ठानिक कलाओं और आत्मा के आवास की यहूदी अवधारणा; स्वर्ग, देह, वेदी और मंदिर के प्रारूपों से प्रभावित रॉबर्ट की वास्तुशिल्पीय आकृतियों और रेखाचित्रात्मक रूपों में भारतीय पोस्टरों, लोकप्रिय छापों और कपड़ों की याद दिलाते सपाट संतृप्त रंगों की परतें होती हैं। यंत्र में उनकी रुचि 1978 से थी, पिछले कुछ बरसों से वह उनकी रचनाओं पर छाया दिखता है। *पोर्टल एंड आल्टर* शृंखला धार्मिक रेखांकनों पर आधारित है, इन छापों और चित्रों में दरवाजा आध्यात्मिक राह का रूपक बना है। *स्क्वेयरिंग द माउण्ट* नाम की अम्लांकनों की शृंखला में रॉबर्ट ने येरुशलेम के टैंपल माउंट के रेखागणितीय रूपांतरण में उसे आयत, वर्ग, वृत्त के आकारों में अध्यात्म और भौतिकता, पृथ्वी और ब्रह्मांड की एकात्मता के रूप में प्रस्तुत किया है। रंगोली या कोलम की प्रक्रिया को प्रतिध्वनित करते उनके रेखांकन भी उसी तरह बार-बार रचे जा सकते हैं। रॉबर्ट कर्शबॉम हार्टफोर्ड, कॉनेक्टीकट स्थित ट्रिनिटी कॉलेज में फाइन आर्ट के प्रोफेसर हैं। □

लेखिका: *कैथरीन मायर्स चित्रकार हैं, वे स्टॉर्स में यूनिवर्सिटी ऑफ कॉनेक्टीकट में कला की प्रोफेसर हैं और 2002 में फुलब्राइट वृत्ति पर भारत आई थीं। इस पर्चे के अंशों को 2005 अटलांटा में कॉलेज आर्ट एसोसिएशन के वार्षिक सम्मेलन में परिचर्चा में प्रस्तुत किया गया था।*